Pushpa Chauhan
Reference Dept of Economics
Vaishali Mahila College Hajipur

B.A Part 1
Paper - 1
20. 05 2020

लागत वक्र

उत्पादक के दृष्टिकोण से लागत अत्यन्त महत्वपूर्ण धारणा है। किसी भी वस्तु का उत्पादन करने के लिए उत्पादनकर्ता को उत्पादन के विभिन्न साधनों के लाभ, इनकी उद्यमशीलता के एक निश्चित संयोग को एकत्रित करना पड़ता है। प्रत्येक उत्पत्ति के साधनों का अपना अलग अलग मूल्य होता है। एक उत्पत्ति के साधन को दूसरे उत्पत्ति के साधन को एक सीमा तक प्रतिस्थापित किया जा सकता है। उत्पादन में महँगे साधन के प्रयोग से कुल उत्पादन लागत बढ़ता है

इस प्रकार किसी वस्तु के उत्पादन में होने वाले व्यय को लागत कहते हैं। उत्पादन के साधनों के अतिरिक्त, घिसावट व्यय, विज्ञापन, मूल्य ह्रास पर भी उत्पादनकर्ता को भुगतान करना पड़ता है। अतः लागत वह पूँजीगत व्यय है जो विक्रयार्थ बनाई हुई किसी वस्तु पर पड़ता है जिसमें श्रम, पूँजी, साहस आदि का पुरस्कार सम्मलित होता है।

इस प्रकार किसी वस्तु के उत्पाद उत्पादन की सामग्री, साधनों का पारितोषिक, श्रमिकों की मजदूरी, कच्चा माल प्राप्त करने वालों की कीमतें, मशीन खरीदने व्यय, जोखिम का मूल्य, घिसावट व्यय, विज्ञापन

Scanned with CamScanner

परिवहन व्यय पर होने वाले सम्पूर्ण भुगतान ही उत्पादन लागत है

अर्थशास्त्रियों द्वारा लागत की विभिन्न प्रकार की धारणाएं प्रतिपादित की गयी है जिनमे निम्नलिखित प्रमुख अवधारणाएं हैं।

1. मौद्रिक लागत Money Cost
2. वास्तविक लागत Real Cost
3. अवसर लागत Opportunity Cost

1. मौद्रिक लागत - किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल व्यय को मौद्रिक लागत कहते है। उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को मुद्रा के रूप में व्यक्त कर दिया जाए तो उत्पादन के उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय करना है वह मौद्रिक लागत कहलाती है। मौद्रिक लागत के अन्तर्गत कच्चे माल पर व्यय, श्रम की मजदूरी, पूंजी पर ब्याज, भूमि का किराया अर्थात लगान, मशीनों की टूट-फूट एवं घिसावट व्यय, प्रबन्धन व्यय यातायात व्यय, बीमा कम्पनी को दी जाने वाली राशि, सामान्य लाभ आदि सभी सम्मलित होती है।

मौद्रिक लागत को तीन भागों में विभाजित किया जाता है

(a) दृश्य लागतें
(B) अदृश्य लागतें
(C) सामान्य लाभ

Scanned with CamScanner

यदि उद्यमी को सामान्य लाभ नहीं मिलता है तो वह उत्पादन को बन्द कर देता है। इस प्रकार संक्षेप में,

कुल मौद्रिक लागत = कुल द्रव्य लागत + अदृश्य लागत + सामान्य लाभ।

2. <u>वास्तविक लागत</u> (Real cost)

मार्शल के अनुसार एक वस्तु के उत्पादन में समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा जो प्रयत्न एवं त्याग किए जाते हैं वही उत्पादन की वास्तविक लागत है। इस प्रकार किसी उत्पादन क्रिया के अन्तर्गत निहित कष्ट एवं त्याग वास्तविक लागत का निर्माण करते हैं।

वास्तविक लागत देश एवं समाज के दृष्टि से महत्वपूर्ण अवधारणा है लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है क्योंकि कष्ट एवं त्याग का व्यक्ति अनुभव कर सकता परन्तु इसे मापा नहीं जा सकता है।

3. <u>अवसर लागत</u> (opportunity cost) –

आस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों द्वारा वास्तविक लागत में संशोधन कर इसके स्थान पर अवसर लागत का प्रयोग किया। क्योंकि वास्तविक लागत में मनोवैज्ञानिक तत्व है जिसे मुद्रा द्वारा मापा नहीं जा सकता। आवश्यकता की तुलना में आर्थिक साधन सीमित होते हैं अतः किसी वस्तु के उत्पादन का अर्थ है - दूसरी वस्तु या वस्तुओं के उत्पादन से वंचित होना।

Contd.

Scanned with CamScanner

(a) दृश्य लागतें (Explicit Cost)

इसमें वह लागतें सम्मिलित होती हैं जो उत्पादक को उत्पादन करने में स्पष्ट रूप से व्यय करना पड़ता है यानि यह लागतें उत्पादन का प्रत्यक्ष व्यय स्पष्ट करती हैं। और उत्पादन लागत - उत्पत्ति के साधनों का पारिश्रमिक, मजदूरी, लगान, ब्याज, उपकरणों पर व्यय, कच्चे माल पर व्यय

बिक्री लागत - विज्ञापन पर व्यय, पैकिंग एवं यातायात पर व्यय

अन्य लागत - कर, बीमा, विद्युत संचार, प्रीमियम पर व्यय

(b) अदृश्य लागतें (Implicit Cost)

इसमें वह लागतें सम्मिलित होते हैं जिसे उत्पादक प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करता है। इसमें मुख्यतः वह साधन होते हैं जो उत्पादक के स्वामित्व होते हैं जैसे उत्पादक के स्वयं के पूँजी का ब्याज

3) सामान्य लाभ -(Normal Profit)

अर्थशास्त्र में सामान्य लाभ को किसी उद्यमी को उत्पादन प्रक्रिया में बनाए रखने के लागत के रूप में देखा जाता है। सामान्य लाभ वह लाभ होता है जब उद्यमी को मात्र इतना आगम प्राप्त हो कि उसके वेतन एवं लागतें निकल जाता है। अतिरिक्त लाभ वह लाभ है जब किसी वस्तु के बिक्री से इतना आगम प्राप्त हो कि उद्यमी की लागत, वेतन के साथ कुछ अतिरिक्त राशि बच जाए तो वही अतिरिक्त लाभ कहलाता है।

Scanned with CamScanner

अक्ष पर उत्पादन की मात्रा तथा oy पर लागत को दिखाते हैं। कुल लागत वक्र को TFC तथा कुल परिवर्तनशील लागत को TVC वक्र से रूप में स्पष्ट किया गया है। TFC रेखा x अक्ष के समानान्तर है जो यह स्पष्ट करता है कि उत्पादन का स्तर कितना भी हो कुल स्थिर लागत स्थिर रहता है। उत्पादन शून्य होने पर भी उत्पादक को TFC के बराबर व्यय वहन करना पड़ेगा। TVC वक्र शून्य बिन्दु से ऊपर की ओर बढ़ता है जो स्पष्ट करता है कि उत्पादन की मात्रा में वृद्धि के साथ कुल परिवर्तनशील लागतें भी बढ़ती हैं। TVC का शून्य बिन्दु o है इसका अभिप्राय है कि उत्पादन शून्य होने पर परिवर्तनशील लागत भी शून्य हो जाती।

रेखाचित्र में TC TFC एवं TVC वक्रों के योग को प्रदर्शित करता है यानि कुल उत्पादन लागत के बराबर है। TC वक्र का प्रारम्भ बिन्दु y अक्ष का वह बिन्दु है जहां से TFC वक्र शुरू होता है। यहां पर उत्पादन शून्य है। जब उत्पादन शून्य होता है तो कुल लागत कुल स्थिर लागत के बराबर होगी क्योंकि शून्य उत्पादन पर परिवर्तनशील लागत पूर्णतः समाप्त हो जाती है। TVC एवं TC के बढ़ने की गति समान है क्योंकि TVC अपने परिवर्तन के अनुपात में ही TC में परिवर्तन करती है। इस प्रकार कुल उत्पादन लागत भी उत्पादन का फलन है $TC = f(Q)$

इस प्रकार स्थिर एवं परिवर्तनशील लागतों का अन्तर अल्पकाल में ही लागू होता है। दीर्घकाल में सभी साधन एवं लागतें परिवर्तनशील हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

बढ़ाना चाहता है तो उसे Y वस्तु के उत्पादन को कम करना पड़ेगा। चित्र से स्पष्ट है कि X वस्तु की MN मात्रा में वृद्धि करने के लिए Y वस्तु की RS मात्रा का त्याग करना पड़ेगा, यही अवसर लागत है। X वस्तु की MN मात्रा की अवसर लागत Y वस्तु की RS मात्रा में कमी को माना जाएगा।

अल्पकालीन लागतें

स्थिर लागत एवं परिवर्तनशील लागत

अल्पकाल समय की वह अवधि होती है जिसमें वस्तु की माँग के अनुरूप पूर्ति में पूर्णतः परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। यानि उत्पत्ति के सभी साधनों में समयानुसार परिवर्तन नहीं हो पाता है। अल्पकाल में उत्पत्ति के कुछ साधन स्थिर होते हैं तथा कुछ परिवर्तनशील।

स्थिर लागत - अल्पकाल में उत्पत्ति के कुछ साधनों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है जैसे - भूमि, मशीन, संगठन एवं ऊँचो प्रबन्ध, तकनीकी ज्ञान इत्यादि। स्थिर साधनों को जो भुगतान किया जाता है उसे स्थिर लागत कहते हैं। ये स्थिर लागतें एक स्थिर मात्रा को व्यक्त करता है जिसे फर्म को अल्पकाल में उठाना पड़ता है चाहे उस फर्म का उत्पादन कम हो या अधिक। यदि अल्पकाल में फर्म कुछ समय के लिए उत्पादन बन्द भी कर दे फिर भी उसे यह स्थिर लागतें सहन करनी ही होती है। स्थिर लागतों को ऊपरि लागतें (overhead cost) भी कहते हैं। इनमें इमारत का किराया, बीमा की फीस,

Scanned with CamScanner

मशीनरी आदि का मूल्य ह्रास (depreciation) की लागतें सम्पत्ति कर, पूंजी पर ब्याज, प्रबन्धक का वेतन आदि सम्मिलित होता है। इस प्रकार स्थिर लागतें वह लागतें हैं जिनको उत्पादन के स्थिर साधन पर उठाना पड़ता है जो अल्पकाल में नहीं बदलती हैं।

<u>परिवर्तनशील लागतें</u> - अल्पकाल में उत्पत्ति के कुछ साधन होते हैं जिन्हे आवश्यकतानुसार समायोजित किया जाता है जैसे - श्रमिक, ईंधन, बिजली, कच्चा माल इत्यादि। ये परिवर्तनशील साधन होते हैं जिन्हें उत्पादन की मात्रा के अनुसार परिवर्तित किया जाता है, अल्पकाल में उत्पादन बन्द कर देने पर परिवर्तनशील लागतों को पूर्णतः समाप्त किया जा सकता है। परिवर्तनशील लागत को मुख्य लागत भी कहा जाता है।

अल्पकाल में:

कुल उत्पादन लागत = कुल स्थिर लागत + कुल परिवर्तनशील लागत

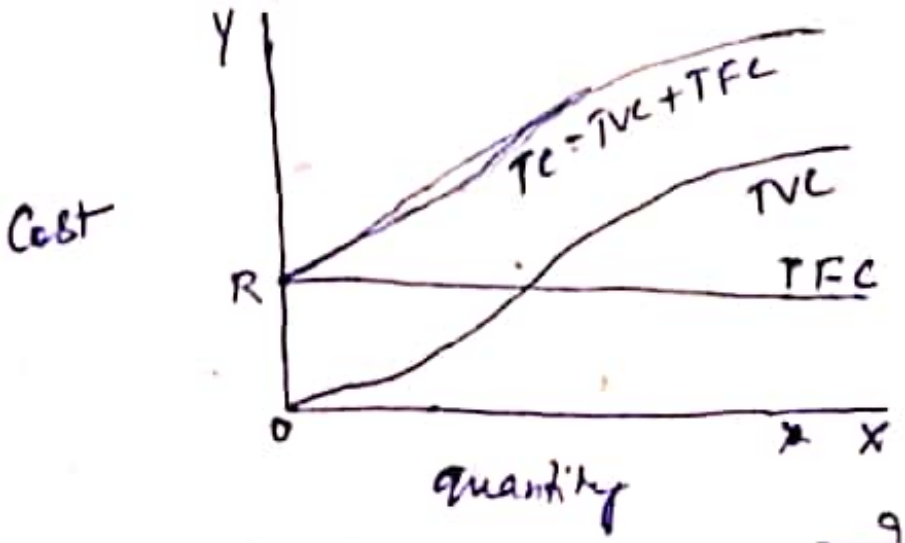

$$TC = TFC + TVC$$

उपरोक्त रेखाचित्र में OX

Pushpa Chauhan 21.05.2020

बेन्हम के शब्दों में " किसी वस्तु की अवसर लागत वह सर्वश्रेष्ठ विकल्प है जिसका उत्पादन उन्हीं उत्पत्ति साधनों द्वारा उसी लागत पर उस वस्तु के विकल्प के रूप में किया जा सकता है"

अवसर लागत को हम एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। एक व्यक्ति को अपनी योग्यता एवं श्रम के आधार पर तीन नौकरियां मिलती है डिग्री कालेज लेक्चरर (वेतन 3000 ₹ मासिक), बैंक ऑफीसर (वेतन 2900 ₹ मासिक) तथा सेल्स ऑफीसर (वेतन 2600 ₹ मासिक)। अन्य बातें के समान रहने पर स्वाभाविक रूप से डिग्री कालेज की नौकरी को चुनेगा। इस चुनाव के दो विकल्प है - 2900 ₹ मासिक वेतन तथा 2600 ₹ मासिक वेतन वाला पद। यह चुने गए पद की अवसर लागत है। अवसर लागत में वस्तु या सेवा के सर्वश्रेष्ठ विकल्प की लागत को रखते हैं।

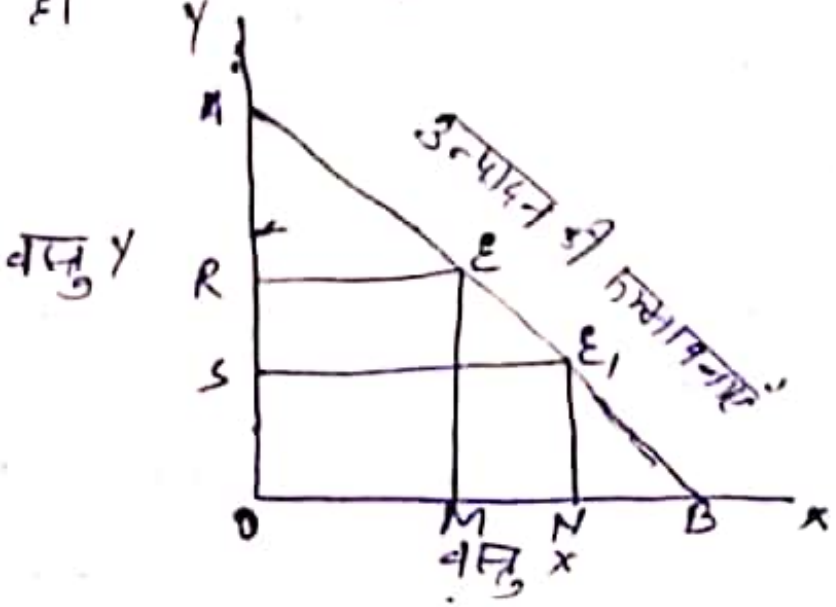

उपरोक्त रेखाचित्र में AB रेखा दो वस्तुओं x और y के मध्य की उत्पादन सम्भावना वक्र है। उत्पादक निश्चित साधन की मात्रा से x एवं y वस्तु का उत्पादन करता है यदि उत्पादक x वस्तु की उत्पादन

Scanned with CamScanner